DR. RANJEET KUMAR

Dept. Of History

H. D. Jain College Ara

M.A , sem.- 4, unit-3

गांधीवादी चरण पर जोर देने के साथ राष्ट्रवाद और महिलाएँ

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन कई चरणों से होकर गुज़रा, लेकिन **1919** से **1947** तक का काल सबसे निर्णायक माना जाता है। यही वह समय था जब स्वतंत्रता संग्राम वास्तव में जन-आंदोलन बना। इस अवधि को गांधीवादी चरण कहा जाता है क्योंकि इस समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में आंदोलन ने नई दिशा, नई रणनीति और नया स्वरूप प्राप्त किया। इस दौर में राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक सुधार, नैतिक पुनर्निर्माण और जनजागरण का व्यापक अभियान बन गया। विशेष बात यह रही कि इस चरण में महिलाओं की भागीदारी अभूतपूर्व रूप से बढ़ी और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा प्रदान की।

गांधी का भारत आगमन और आंदोलन में परिवर्तन

1915 में जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, तब तक राष्ट्रीय आंदोलन मुख्यतः शिक्षित मध्यम वर्ग और अभिजात नेतृत्व तक सीमित था। पहले के आंदोलन याचिकाओं, प्रस्तावों और संवैधानिक सुधारों तक केंद्रित थे। गांधी ने आंदोलन को आम जनता तक पहुँचाया। उन्होंने सत्य, अहिंसा और जनसहभागिता को संघर्ष का आधार बनाया।

उनके नेतृत्व में आंदोलन केवल अंग्रेजी शासन के विरुद्ध राजनीतिक लड़ाई नहीं रहा, बल्कि यह आत्मशुद्धि, स्वावलंबन और नैतिक पुनर्निर्माण का अभियान बन गया। गांधी ने किसानों, मजदूरों, छात्रों और विशेष रूप से महिलाओं को आंदोलन से जोड़ा।

गांधीवादी राष्ट्रवाद की प्रकृति

राष्ट्रवाद सामान्य रूप से एक ऐसी भावना है जिसमें लोग साझा इतिहास, संस्कृति और उद्देश्य के आधार पर स्वयं को एक राष्ट्र के रूप में पहचानते हैं। लेकिन गांधी का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का साधन नहीं था। उनका राष्ट्रवाद नैतिकता, मानवता और समावेशिता पर आधारित था।

1. अहिंसात्मक राष्ट्रवाद

गांधी का मानना था कि हिंसा से प्राप्त स्वतंत्रता स्थायी नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह को अपनाया। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिए आग्रह। इसमें अन्याय के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध किया जाता है।

2. समावेशी राष्ट्रवाद

गांधी ने जाति, धर्म और भाषा के आधार पर विभाजन को अस्वीकार किया। उनका राष्ट्रवाद सबको साथ लेकर चलने वाला था। वे हिंदू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता उन्मूलन और सामाजिक समरसता पर जोर देते थे।

3. स्वदेशी और ग्राम स्वराज

गांधी का विश्वास था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। उन्होंने चरखा, खादी और स्वदेशी वस्तुओं को राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक बनाया। इससे महिलाओं को भी घर बैठे आंदोलन से जुड़ने का अवसर मिला।

प्रमुख आंदोलन और उनका प्रभाव

गांधीवादी चरण में कई महत्वपूर्ण आंदोलन हुए जिन्होंने राष्ट्रवाद को जनांदोलन में बदल दिया।

असहयोग आंदोलन **(1920-22)**

असहयोग आंदोलन के माध्यम से गांधी ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, सरकारी नौकरियों से इस्तीफा और शिक्षण संस्थानों के बहिष्कार का आह्वान किया। महिलाओं ने विदेशी कपड़ों की होली जलाने और खादी अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन **(1930)**

सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ नमक कानून तोड़ने से हुआ। दांडी यात्रा के बाद पूरे देश में नमक सत्याग्रह हुआ। हजारों महिलाएँ गिरफ्तार हुईं और उन्होंने जेल जाकर भी संघर्ष जारी रखा।

भारत छोड़ो आंदोलन **(1942)**

भारत छोड़ो आंदोलन स्वतंत्रता संघर्ष का सबसे उग्र चरण था। इस आंदोलन में महिलाओं ने नेतृत्व संभाला क्योंकि अधिकांश पुरुष नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे। कई स्थानों पर महिलाओं ने भूमिगत गतिविधियाँ संचालित कीं।

महिलाओं की स्थिति और परिवर्तन

गांधीवादी चरण से पहले भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सीमित थी। वे मुख्यतः घरेलू दायित्वों तक सीमित थीं। शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी कम थी। लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने का अवसर दिया।

गांधी ने महिलाओं को केवल सहयोगी नहीं बल्कि समान भागीदार माना। उनका विश्वास था कि महिलाओं में त्याग, धैर्य और नैतिक शक्ति अधिक होती है, जो अहिंसात्मक आंदोलन के लिए आवश्यक है।

गांधीवादी चरण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी

1. राजनीतिक सहभागिता

महिलाओं ने सत्याग्रह, धरना, जुलूस और बहिष्कार अभियानों में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने शराब की दुकानों और विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने शांतिपूर्ण धरने दिए।

2. नेतृत्व की भूमिका

सरोजिनी नायडू ने दांडी मार्च के बाद नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया।
कस्तूरबा गांधी ने कई आंदोलनों में अग्रिम भूमिका निभाई और जेल यात्राएँ कीं।
अरुणा आसफ अली ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान झंडा फहराकर आंदोलन को नई दिशा दी।

3. ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी

गाँवों में महिलाओं ने खादी कातने, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्थानीय आंदोलनों में सक्रिय योगदान दिया। इससे राष्ट्रवाद शहरी सीमाओं से बाहर निकलकर ग्रामीण भारत तक पहुँचा।

सामाजिक प्रभाव

महिलाओं की सक्रियता ने समाज में व्यापक बदलाव लाया।

- पर्दा प्रथा और सामाजिक बंधनों में ढील आई।
- महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन मिला।
- सार्वजनिक जीवन में उनकी स्वीकार्यता बढ़ी।

राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को आत्मविश्वास दिया कि वे राष्ट्र निर्माण में समान भूमिका निभा सकती हैं।

राष्ट्रवाद और महिला सशक्तिकरण का संबंध

गांधीवादी राष्ट्रवाद ने महिलाओं को केवल राजनीतिक आंदोलन में शामिल नहीं किया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। खादी आंदोलन और ग्राम उद्योगों में महिलाओं की बड़ी भूमिका रही। इससे आर्थिक आत्मनिर्भरता का मार्ग खुला।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान में महिलाओं को समान अधिकार दिए गए। यह उपलब्धि गांधीवादी चरण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का परिणाम भी थी।

गांधीवादी चरण भारतीय राष्ट्रवाद का स्वर्णिम काल था। इसने स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन बनाया और समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ा। महिलाओं की भागीदारी ने इस आंदोलन को नैतिक शक्ति और व्यापक आधार प्रदान किया।

महिलाएँ अब केवल दर्शक नहीं रहीं; वे आंदोलन की धुरी बन गईं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि राष्ट्र की स्वतंत्रता और महिला स्वतंत्रता एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। गांधीवादी चरण ने भारतीय महिलाओं को नई पहचान, नया आत्मविश्वास और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका प्रदान की।